विषय	हिंदी
प्रश्नपत्र सं. एवं शीर्षक	**P3: कथेतर साहित्य**
इकाई सं. एवं शीर्षक	**M33: 'रिपोर्ताज' 'ऋणजल: धनजल'**
इकाई टैग	**HND_P3_M33**

निर्माता समूह	
प्रमुख अन्वेषक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
प्रश्नपत्र समन्वयक	**प्रो. सूरज पालीवाल** अध्यक्ष, हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग, साहित्य विद्यापीठ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : surajpaliwal@yahoo.com
इकाई लेखक	**डॉ. राजीव कुमार झा** हिंदी विभाग, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ईमेल : rkjha51266@gmail.com
इकाई समीक्षक	**प्रो. गिरीश्वर मिश्र** कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : misragirishwar@gmail.com
भाषा संपादक	**प्रो. आनंद वर्धन शर्मा** प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) 442001 ईमेल : anandsharma_64@yahoo.co.in

पाठ का प्रारूप

1. पाठ का उद्देश्य
2. प्रस्तावना
3. रेणु के 'रिपोर्ताज'
4. ऋणजल-धनजल
5. निष्कर्ष

1. पाठ का उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के उपरांत आप-

- 'रिपोर्ताज' के स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
- अकाल्पनिक गद्य की अन्य विधाओं यथा- यात्रा वृतांत, संस्मरण, डायरी और आत्मकथा से 'रिपोर्ताज' के अंतर्संबंधों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- रेणु के कथा-साहित्य में भी 'रिपोर्ताज' विधा अनुस्यूत है इसकी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- रिपोर्ताज के शिल्प को जान सकेंगे।

2. प्रस्तावना

'रिपोर्ताज' मूलतः फ्रांसीसी भाषा से गृहीत शब्द है। इसे अँगरेजी के 'रिपोर्ट' से भी जोड़ा जाता है। 'रिपोर्ट' से सम्बद्ध होकर भी यह शुष्क दफ्तरी या सरकारी प्रतिवेदन या अखबार के संवाददाता के द्वारा लिखित इतिवृत्तात्मक समाचार-मात्र नहीं है। इसमें 'रिपोर्ट' की घटनात्मकता एवं वर्णनात्मकता के साथ-साथ लेखकीय भावनाओं की आर्द्रता भी मिलती है। लिखने वाले की यह आत्मनिष्ठता वर्णित वस्तु, विषय या घटना की यथार्थता को बिना विकृत किए 'रिपोर्ट' को प्रभावी बना देती है। 'खबर' में व्यक्तित्व की यह खनक ही 'रिपोर्ताज' को केवल 'रिपोर्ट' नहीं, साहित्य-रूप बना देने में समर्थ होती है। वर्तमानकालिक यथार्थ से सम्बद्ध यह गद्य-विधा कल्पना के आकाश में उड़ने से बचती है। चूँकि इसका लेखक स्वयं घटनाओं का द्रष्टा-भोक्ता होता है, अतः वह वस्तु-वर्णन की यथार्थता को सुरक्षित रखते हुए अपने ऊपर पड़े प्रभावों को भी व्यक्त करता है। चंदवरदायी की तरह वह समरभूमि में जाकर युद्ध का केवल आँखो-देखा वर्णन ही नहीं करता, बल्कि लड़ाई में अपनी भागीदारी के कारण निजी अनुभूतियों को भी प्रकाशित करता है।

'रिपोर्ताज' केवल वस्तुपरक सूचना का स्वरूप नहीं रखता है, अपितु यह लेखकीय प्रतिक्रियाओं का भी दस्तावेज है, अतः इसके लिए हिन्दी में कभी-कभी प्रयुक्त- 'सूचनिका' शब्द बहुत संगत नहीं है। हमारे साहित्य शास्त्रियों और साहित्येतिहासकारों ने 'सूचनिका' के स्थान पर मूल विदेशी शब्द 'रिपोर्ताज' को ही मान्यता प्रदान की है, क्योंकि इससे प्रस्तुत विधा की पाश्चात्य अवधारणा एवं बनी हुई परम्परा का ज्ञान होता है। यह फ्रांसीसी शब्द यूरोप में एक विशिष्ट गद्य-विधा के लिए रूढ़ हो गया है, अतः हिन्दी में इसे यथावत् ले लिया गया है, क्योंकि 'सूचनिका' जैसे अनूदित शब्द से 'रिपोर्ताज' के उस स्वरूप एवं शिल्प पर कोई प्रकाश नहीं पड़ता है जिसमें खबर के यथार्थ को मर्मस्पर्शिता और संवेदनशीलता प्रदान की जाती है। हिन्दी में अधिकतर विद्वान् 'रिपोर्ताज' शब्द को यथावत् ग्रहण कर चुके है। यह मूल फ्रांसीसी शब्द इतर भाषाओं में भी इस साहित्य-रूप की संज्ञा के तौर पर मान्य हो गया है। हिन्दी में 'रिपोर्ट' के लिए 'रपट' शब्द का भी चलन है। 'रिपोर्ताज' एक नयी साहित्यिक विधा है। हिन्दी में इसका इतिहास पुराना नहीं है। मूलतः यह पत्रकारिता से जुड़ी हुई एक विदेशी साहित्यिक विधा है और रेणु इसके आरंभिक प्रयोक्ताओं में से एक हैं।

हिन्दी में 'रिपोर्ताज' विधा का श्रीगणेश 1936 के आसपास माना जाता है। 1938 में 'रूपाभ' नामक पत्रिका में शिवदान सिंह चौहान का रिपोर्ताज 'लक्ष्मीपुरा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। 'मौत के खिलाफ जिंदगी की लड़ाई' नाम से शिवदान सिंह चौहान का दूसरा रिपोर्ताज हंस में प्रकाशित हुआ था, लेकिन कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' मानते हैं कि सन् 1926 में गुरुकुल कांगड़ी के रजत-जयंती- महोत्सव के लिए उन्होंने जो सजीव 'रिपोर्ताज' प्रस्तुत किया था वही हिन्दी का पहला 'रिपोर्ताज' है। रांगेय राघव को रिपोर्ताज लेखन में विशेष प्रसिद्धि प्राप्त हुई है। 'तूफानों के बीच' जो 1946 ई. में प्रकाशित हुआ था उनका महत्त्वपूर्ण रिपोर्ताज संग्रह है। इस रिपोर्ताज में बंगाल के अकाल का मार्मिक चित्रण हुआ है। बंगाल का अकाल लेखक के लिए मात्र घटना नहीं हैं। लेखक उसका भोक्ता और द्रष्टा भी है। रामनारायण उपाध्याय के रिपोर्ताज 'गरीब और अमीर पुस्तकों में' लेख और जर्नल के तत्त्व मिले हुये हैं। उपेन्द्रनाथ अश्क के रिपोर्ताज 'रेखाएँ और चित्र' में संकलित हैं। धर्मवीर भारती ने 'युद्धयात्रा' नामक रिपोर्ताज में पाकिस्तान के युद्ध का वर्णन किया है। 'प्लाट का मोर्चा' शमशेर बहादुर सिंह का उल्लेखनीय रिपोर्ताज है।

चूँकि 'रिपोर्ट' के कलानिष्ठ एवं साहित्यमुखी रूप को ही 'रिपोर्ताज' की संज्ञा दी गई है, अतः इसमें पत्रकार की वस्तुनिष्ठता, रेखाचित्रकार के निरूपण कौशल तथा कथाकार की वर्णनशक्ति का समाहार मिलता है। पत्रकार एवं

कलाकार की विशेषताओं से युक्त लेखक ही इस विधा का सही प्रयोक्ता हो सकता है। जन जीवन की जानकारियों को साहित्यिक शैली में उपस्थित करनेवाला जब केवल 'रिपोर्टर' नहीं, रचनाकार बनकर साम्प्रतिक इतिहास को पत्रकारिता के माध्यम से ललित साहित्य का रूप प्रदान करता है तब यह विधा आकार ग्रहण करती है।

यथार्थ की प्रभावशाली प्रस्तुति 'रिपोर्ताज' को 'रिपोर्ट' से विशिष्ट बनाती है। यह कार्य कल्पनाशीलता का पूर्णतः तिरस्कार कर सम्पन्न नहीं हो सकता है। पत्रकार-कला, कहानी-कला, निबन्ध-कला, रेखांचित्रकला और संस्मरण-लेखन-कला की विशेषताओं से अन्वित होकर ही यह विधा अपने लक्ष्य की प्राप्ति करती है। देखा-भोगा यथार्थ 'रिपोर्ताज' का मूल बीज है जिसे भावुकता एवं कल्पनाशीलता के साथ पल्लवित कर लेखक अपनी अनुभूतिप्रवणता और साहित्यिकता की छाप छोड़ता है।

यह विधा व्यवहारतः उस पत्रकारिता से सम्बद्ध है जिसकी सामग्री अल्पजीवी समझी जाती है। साहित्य स्थायी महत्व की वस्तु है और पत्रकारिता की मांगों की पूर्ति के लिए प्रकाशित चीजें बहुत टिकाऊ नहीं होती हैं, अतः पत्रकारिता की कोख से उत्पन्न 'रिपोर्ताज' नाम की विधा का स्थायित्व बहुत से लोगों के अनुसार संदिग्ध है। कई लोग इस जाति की कृतियों को अखबारी कहकर टाल देते हैं, किन्तु वे भूल जाते हैं कि यह प्रभावाभिव्यंजक गद्यरूप क्षणों के मेल से बनने वाले वर्तमान के इतिहास का जीवन्त दस्तावेज है जो उच्चस्तरीय पत्रकारिता एवं उच्चस्तरीय साहित्यिकता के मिलाप का निदर्शन है।

3. रेणु के 'रिपोर्ताज'

'ऋणजल-धनजल' हिन्दी के प्रसिद्ध आंचलिक कथाकार फणीश्वर नाथ रेणु की कृति है जो पत्रकारिता और साहित्य के मिलाप से प्रादुर्भूत 'रिपोर्ताज' नामक नयी गद्य-विधा की प्रतिनिधि रचना है। इसका प्रकाशन अज्ञेय के द्वारा संपादित 'दिनमान' में कई किस्तों में हुआ था। पुस्तकाकार रूप में यह कृति सन् 1975 ई0 में सामने आई थी।

रेणु का संबंध उपन्यासों और कहानियों के साथ-साथ पत्रकारिता से भी था। उन्होंने 'ऋणजल' के रूप में तत्कालीन दक्षिण बिहार के अभूतपूर्व सूखे और अकाल का वृत्तांत लिखा था जो 'दिनमान' में क्रमशः छपा था। इसी तरह उनके 'धनजल' में पटने की भयानक बाढ़ का वर्णन हुआ है। अनावृष्टि और अतिवृष्टि जनित दो स्थितियों को निरूपित करनेवाली उनकी 'ऋणजल-धनजल' शीर्षक पुस्तक 'रिपोर्ताज' लिखने के उनके कौशल को भली-भाँति दर्शित करती है।

रेणु 'विश्वमित्र', 'जनता', 'धर्मयुग', 'अणिमा', 'दिनमान' आदि अनेक पत्रों से सम्बद्ध थे। उनकी यह सम्बद्धता पत्रकार-धर्म एवं युगधर्म ही नहीं, आंचलिक जीवन-मर्म की भी साहित्यिक गवाही देती है। वे सन् 1965 से 1967 ई0 तक 'दिनमान' के 'रिपोर्टर' थे। उन्होंने 'बिदापत नाच' (साप्ताहिक 'विश्वमित्र', कलकत्ता, सन् 1945 ई0) से 'रिपोर्ताज' लिखने का जो सिलसिला शुरु किया था वह 'पटना-जलप्रलय' के लेखन अर्थात् 1975 ई0 तक जारी रहा। इस बीच उन्होंने कई विषयों पर कई शैलियों के 'रिपोर्ताज' प्रस्तुत किए थे जो देश काल एवं लोकजीवन के विविध स्तरों का उद्घाटन करते हैं। रेणु का पहला 'रिपोर्ताज' 1945 में प्रकाशित हुआ था एवं अन्तिम 1975 में सामने आया था। रेणु के कई 'रिपोर्ताज' पत्र-पत्रिकाओं के अंबार में गुम हो गए हैं, किन्तु जो उपलब्ध हैं वे परिमाण ही नहीं, महत्व में भी कम नहीं है। 'रिपोर्ताज' को रेणु ने प्रायः तीस वर्षों के अपने साहित्यिक जीवन में आरम्भ से अन्त तक महत्त्व दिया था।

स्वातंत्र्योत्तर युग में इस विधा की ओर और भी लेखकों का रुझान हुआ। रामकुमार वर्मा कृत 'यूरोप के स्केच' में संस्मरण, रेखाचित्र और रिपोर्ताज के मिले जुले तत्व दिखाई पड़ते हैं। लक्ष्मीचंद्र जैन के रिपोर्ताज संग्रहों- 'कागज की किश्तियाँ' तथा 'नये रंग नये ढंग' में दृष्टि की सूक्ष्मता तथा गहरे अध्ययन की पृष्ठभूमि दिखाई पड़ती है। स्वातंत्र्योत्तर भारत की स्थितियों पर अमृतराय ने 'हंस' में जो रिपोर्ताज लिखे वे सब 'लाल धरती' शीर्षक से संकलित हुए।

युद्ध की पृष्ठभूमि पर बहुत से रिपोर्ताज लिखे गए। 1966 में भारत-पाकिस्तान युद्ध की आधारभूमि पर शिवसागर मिश्र ने 'लड़ेंगे हजार साल' शीर्षक से रिपोर्ताज लिखे। 'धर्मयुग' पत्रिका में 1972 में धर्मवीर भारती के रिपोर्ताज 'ब्रह्मपुत्र की मोर्चाबंदी' और 'युद्ध क्षेत्र मुक्त क्षेत्रे' शीर्षक से प्रकाशित हुए।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के गाँवों के दुःख दर्द की अभिव्यक्ति विवेकीराय के रिपोर्ताज 'जुलुस रूका है' में हुई है। मणि मधुकर का 'रिपोर्ताज' संग्रह 'पिछला पहाड़ा' तथा 'सूखे सरावेर का भूगोल' में रेगिस्तान का जीवन वर्णित हुआ है। इनमें मरुभूमि के जीवन-संघर्षों को लेखक ने मानवीय सहानुभूति के साथ उभारा है। अज्ञेय के संग्रह 'देश की मिट्टी बुलाती है' में भी कुछ श्रेष्ठ रिपोर्ताज संकलित हैं जिनमें 'जापानी युद्धबंदियों के साथ' का स्थायी महत्त्व है।

इस प्रकार 'रिपोर्ताज' विधा को विकसित करने में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं तथा साहित्यकारों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। इन्हीं के सतत प्रयासों से 'रिपोर्ताज' अपने वैशिष्ट्य को स्थापित करते हुए, एक साहित्य-विधा के रूप में अलग पहचान बना सका है।

श्री सुरेन्द्र चौधरी ने रेणु के इस साहित्य को तीन वर्गों में बांटा है-

1. विद्यापति - श्रृंखला के 'रिपोर्ताज'
2. 'सोनोआमों' - श्रृंखला के 'रिपोर्ताज' और
3. 'ऋणजल-धनजल' - श्रृंखला के 'रिपोर्ताज'।

विद्यापति श्रृंखला के 'रिपोर्ताज' मिथिलांचलिक लोक जीवन और लोक संस्कृति से सम्बद्ध हैं। 'बिदापतनाच' इसी श्रेणी में आता है। 'सोनो आर्मो' का अर्थ 'छोटी माँ' है। यह नेपाली भाषा का शब्द है। रेणु के लिए बंगाल और नेपाल 'छोटी माँ' की तरह हैं। इन दोनों से जुड़े 'रिपोर्ताज' दूसरी कोटि में आते हैं। 'नेपाली क्रांति-कथा' इस श्रेणी का प्रतिनिधित्व करती है। 'ऋणजल-धनजल' - शृंखला के 'रिपोर्ताज' अकाल और बाढ़ के वर्णनों की प्रस्तुति करते हैं। 'हड्डियों का पुल', 'भूमिदर्शन की भूमिका', 'पटना-जलप्रलय' आदि इसके अंतर्गत हैं।

विषयवस्तु की दृष्टि से रेणु के अनेक 'रिपोर्ताज' बाढ़, भूख और अकाल पर अवलम्बित है।

उनके 'जै गंगा', 'डायन कोसी', 'एक टू आस्ते-आस्ते', 'समाज', 'विराटनगर की खूनी दास्तान' और 'डी.एस.पी. की बड़ी-बड़ी मूँछ' नामक अप्राप्य 'रिपोर्ताज' बहुत दूर तक शीर्षकों के सहारे अपने कथ्य को प्रकट करते हैं। 'जै गंगा' और 'डायन कोसी' शीर्षक रचनाएँ दो प्रसिद्ध नदियों की बाढ़ों से सम्बद्ध हैं। 'हड्डियों का पुल', 'पुरानी कहानी: नया पाठ' और 'पटना जलप्रलय' उपलब्ध 'रिपोर्ताज' भूख तथा बाढ़ की विभीषिकाओं का वर्णन करते हैं। 'पटना-जलप्रलय' में गंगा की बाढ़ से पीड़ित जनजीवन का चित्रण हुआ है तथा 'हड्डियों का पुल' और 'पुरानी कहानी: नया पाठ' में

कोसी नदी की बाढ़ों से प्रभावित अंचल का दिग्दर्शन कराया गया है।

बाढ़ की तरह अकाल भी मानवीय त्रासदी है। दुर्भिक्ष कभी-कभी बाढ़ के कारण भी आता है। 'हड्डियों का पुल' एवं 'पुरानी कहानीः नया पाठ' में बाढ़ के कारण उत्पन्न अन्न संकट और भुखमरी का हृदयद्रावक निरूपण हुआ है। 'पटना-जलप्रलय' में भी कहीं-कहीं खाद्य पदार्थो के अभाव के जो वर्णन मिलते हैं उनसे बाढ़ और अकाल एवं भूख के रिश्ते पर रोशनी पड़ती है। वैसे इस प्रसंग में 'भूमिदर्शन की भूमिका' अधिक उल्लेख्य है जो मुख्यतः अकाल पर ही केन्द्रित है। 'दिनमान' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित यह 'रिपोर्ताज' दक्षिण बिहार के सूखे या अकाल को विस्तार से रूपायित करता है।

रेणु के 'रिपोर्ताज' मजदूरों एवं किसानों के आन्दोलनों को भी अभिव्यक्ति देते हैं। इन आन्दोलनमूलक रचनाओं का मूल वक्तव्य या कथ्य अधिकार एवं मानवीय गरिमा के लिए संघर्ष है। अपने राजनैतिक तेवर के बावजूद ये कृतियाँ तत्वतः मनुष्य की अदम्य जीवनी-शक्ति के प्रति विश्वास उत्पन्न करती हैं। रेणु अपनी आंचलिक पहचान के कारण विख्यात हैं। उन्होंने 'रिपोर्ताज' लिखने के क्रम में अपनी यह पहचान सुरक्षित रखी है। क्षेत्रीय या आंचलिक लोकजीवन के रंगों को व्यक्त करनेवाले उनके कई 'रिपोर्ताज' मिलते हैं। 'बिदापत-नाच', 'एकलव्य के नोट्स' और 'समय की शिला पर: सिलाव का खाजा' इसी कोटि की रचनाएँ हैं। पहले 'रिपोर्ताज' में मिथिला के विशिष्ट लोकनृत्य का समाजशास्त्रीय, लोकवार्तामूलक और रसात्मक परिचय दिया गया है। निम्नवर्गीय जनजीन के अश्रु- हास को आंचलिक वैशिष्ट्यों के साथ अभिव्यक्त करने में रेणु का यह पहला 'रिपोर्ताज' अत्यन्त सफल सिद्ध हुआ है। इसी तरह 'एकलव्य के नोट्स' में पूर्वी बिहार के पूर्णिया अंचल के परानपुर नामक गाँव का रोचक विवरण उपस्थित किया गया है। अज्ञात जनपदीय-जीवन को प्रामाणिकता एवं रसात्मकता के साथ अंकित करने की दृष्टि से यह स्मरणीय 'रिपोर्ताज' है। इस क्रम में 'समय की शिला पर: सिलाव का खाजा' शीर्षक 'रिपोर्ताज' भी ध्यातव्य है जिसमें नालन्दा-राजगिर क्षेत्र के लोकजीवन की झाँकी मिलती है। जिस तरह 'बिदापत-नाच' और 'एकलव्य के नोट्स' में उत्तर बिहार के मैथिली भाषा-भाषी क्षेत्र का दिग्दर्शन कराया गया है उसी तरह 'समय की शिला पर: सिलाव का खाजा' में मगही भाषा-भाषी उस अंचल पर दृष्टिपात किया गया है जो जरासन्ध के काल से ही प्रसिद्ध है। यह 'रिपोर्ताज' ऐतिहासिक प्रकृति का है। जहाँ 'बिदापत-नाच' और 'एकलव्य के नोट्स' में उत्तर बिहार के वर्तमानकालिक आंचलिक जीवन का लेखा-जोखा मिलता है वहाँ 'समय की शिला पर: सिलाव का खाजा' में एक अतीतोन्मुख मानसिक यात्रा के क्रम में मध्य बिहार के मगध अंचल के ऐतिहासिक रंग व्यक्त हुए हैं।

रेणु के कुछ 'रिपोर्ताज' अंतर्जगत् की उनकी आस्था और उनके योगक्षेम मूलक क्रियाकलापों से भी सम्बद्ध हैं। कथ्य की दृष्टि से लेखक का आत्म-तत्त्व ही इनका प्रतिपाद्य है। 'रसके बस में चार रात' यों तो रामकृष्ण परमहंस से सम्बद्ध एक आयोजन का विवरण है, किन्तु इसमें लेखक की निजी निष्ठा और संवेदनशीलता को ही मुख्यता मिली है। इसी तरह अपनी 'तीसरी कसम अर्थात् मारे गए गुलफाम' शीर्षक कहानी पर बनने वाली 'फिल्म' के सन्दर्भ में रेणु ने बम्बई की जो यात्रा की थी उसके वर्णन-क्रम में भी उनका निजत्व ही प्रधान हो गया है। इस श्रृंखला के 'एक फिल्मी यात्रा', 'तीसरी कसम के सेट पर तीन दिन' और 'स्मृति की एक रील' शीर्षक 'रिपोर्ताज' बम्बई के चलचित्र जगत के साथ रेणु के रिश्तों पर रोशनी डालते हैं।

इस तरह स्पष्ट है कि रेणु के 'रिपोर्ताज' अनेक विषयों का स्पर्श करते हैं। ये अपने वैविध्य और विस्तार में लेखक के विभिन्न 'सरोकारों' को प्रकट करते हैं, किन्तु इनका आधारभूत कथ्य बहुरंगी जीवन है। ये देखे-सुने जीवनाभुवों के

हर्ष-विशाद के अभिलेख की प्रामाणिकता रखते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं है कि लेखक की भावुकता से कहीं भी यह प्रामाणिकता म्लान नहीं हुई है।

3. ऋणजल-धनजल

ऋणजल-धनजल में पटने में आई हुई बाढ़ का वृत्तान्त है। इसमें बाढ़ की विभीषिका का व्यापक वर्णन हुआ है। इस जल-प्रलय में रेणु बाढ़ से पीड़ित जनजीवन को चित्रित करते हैं। वे लिखते है -

(क) 'यों पटना शहर भी बीमार ही है। इसके एक बाँह में हैजे की सूई का और दूसरी में टाईफाइड के टीके का घाव हो गया है। पेट से 'टेप' करके जलोदर का पानी निकाला जा रहा है। आँखें जो कंजविटवाइटिंस (जोय बांग्ला) से लाल हुई थीं-- तरह-तरह की नकली दवाओं के प्रयोग के कारण क्षीण ज्योति हो गई हैं। कानतो एकदम चौपट ही समझिए - हियरिंग एड से भी कोई फायदा नहीं। बस, 'आइरन लंग्स' अर्थात रिलीफ की साँस के भरोसे अस्पताल के बेड पर पड़ा हुआ किसी तरह 'हुक-हुक' कर जी रहा है। ('मानुश बने रहे।', 'पटना-जल प्रलय', 'रेणु रचनावली', 4, पृ. 294)

(ख) 'पानी चक्राकार नाच रहा है, अर्थात् दोनों और गड़ढे गहरे हो रहे हैं.... बेबस कुत्तों का सामूहिक रूदन, बहते हुए सूअर के बच्चों की चिंचियाहट, कोलाहल-कमरव-कुहराम! ... हो रामसिंगार, रिक्शवा बहलो हो। धर-धर-धर! ('पटना- जलप्रलय', 'रेणु रचनावली', 4, पृ. 259)

(ग) '.....सूअर के कई बच्चों की लाषों को लाठी की 'बहगी' में लटकाकर का दल आ रहा था। दल के एक युवक ने मुर्गी की लाश का पीछा किया। पानी से उठकर डैने को खींचकर जाँचने लगा और फिर चिल्लाकर बोला- 'नहीं। सड़ल न है, काठ के जैसन कड़ा हो गया है। '---' ले ले आ, ले ले आ!! 'बहंगी में लटकाती हुई सूअर के बच्चों की लाशों के साथ सफेद मुर्गी भी लटकी। अब उसका मरना सार्थक हो गया। सूअर के बच्चे और मुर्गी की मृत देह अब 'लाश' नहीं उपभोक्ता-वस्तु बन गई ...जन्म अकारथ नहीं गया। ('पटना-जलप्रलय', 'रेणु रचनावली', 4, पृ. 272)

रेणु सिर्फ बाढ़ की त्रासदी का ही लोमहर्शक दृश्य नहीं उपस्थित करते हैं, बल्कि पानी में मरे हुए पक्षी के बहने का भी हृदयदावक उल्लेख करते हैं। सूखे से ग्रस्त दक्षिण बिहार का वृत्तांत 'ऋणजल' में मिलता है। यह 'भूमि-दर्शन' का अछूता आयाम है। सूखे के संदर्भ में रेणु की ये टिप्पणियाँ ध्यातव्य हैं-

(क) 'अकाल और सूखा में जन्मे हुए बच्चों के सही नाम 'अकालू' और 'सुखाड़ी' नहीं तो और क्या होंगे?' ('रेणु रचनावली', 4, पृ. 170)

(ख) 'चित्ती कौड़ी-जैसी आँखोवाला दुबला-पतला भूखा बिनोदवा, भूखी जशोदा, सूखी बच्ची देवी, दाने को तरसती कलेसरी और सूखी माँ की छाती को चूसता हुआ सात दिन का शिशु-अकलवा!' (वही, पृ. 171)

(ग) 'औरंगाबाद के बाद फिर धरती को झुलसी हुई लाश पड़ी मिली! कुरूप, कुत्सित भूखंड' (वही, पृ. 182)

(घ) '....आकाश में एक दैत्याकार आँख फोड़वा- टिड्डा जैसा भूरे रंग का फौजी हेलिकॉप्टर, साइरन की तरह अविराम पतली सीटी-सी बजाता हुआ, घोर गर्जन करता हुआ, छतों पर धूल का धूर्णिचक्र उड़ाता, 'लो-- फलाइंग' करके धीरे-धीरे नीचे की ओर आता है। 'थुथने' को तनिक आगे की ओर झुकाकर, पूँछ ऊपर किया....।' ('पटना- जलप्रयल', 'रेणु रचनावली', 4, पृ. 283-284)

तरह-तरह के स्वरों, दृश्यों और क्रिया-कलापों को रेणु के 'रिपोर्ताज' मूर्त करते हैं। पूरे परिदृश्य और परिवेश को वे

मानवीय स्पर्श के साथ उजागर करते हैं। लेखनगत यह चित्रात्मकता लेखके के सुनने और देखने की शक्तियों का सत्यापन करती है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि उक्त शक्तियाँ ही रेणु के शिल्प को धार देती हैं।

विवेचकों ने 'ऋणजल-धनजल' पर जिन मन्तव्यों की प्रस्तुति की है उनसे इस कृति का वैशिष्ट्य उजागर हुआ है। ऐसे कतिपय विचार यों हैः-

(क) 'पूर्णिमा के पर्दे पर उसकी पीठिका में हम भारतीय ग्रामवासी और इतिहास के बीच मुठभेड़ और टकराव की गड़गड़ाहट सुनते हैं। एक ऐसा क्षण आता है जब पात्र और पीठिका में कोई अन्तर रहता- दोनों एक-दूसरे में इतना गुंथ जाते हैं कि मनुष्य धरती और इतिहास के बीच सीमाएँ धुल-सी जाती है। किन्तु आपसी मुठभेड़ से जो बिजली चमकती है, बिहार के अवसन्न धूल भरे आकाश में जो चिनगारी कौंधती है, 'रेणु' ने कैमरे की आँखों से उसे अपनी जीवंत फड़फड़ाती तात्कालिकता में पकड़ने की कोषिष की थी। ('निर्मल वर्मा, 'समस्त मानवीय दृष्टि', 'ऋण जल-धन जल', पृ. 18)

(ख) 'रेणु का देखना एक ही साथ बाहर और भीतर दोनों ओर होता है। यही उनके ब्यौरों का अर्थ देता है। ('रघुवीर सहाय, 'ऋणजल-धनजल' की भूमिका।)

'ऋणजल-धनजल' के रिपोर्ताज लेखक की पर्यवेक्षण शक्ति के उत्तम उदाहरण हैं। इनमें प्रायः वह श्रव्य-दृश्यात्मक पद्धति दृष्टिगत होती है जो रेणु के कथा साहित्य में उपलब्ध होती है। वर्णनों की यह ऐंन्द्रियता लेखक के कर्तृत्व को बिंबधर्मी बनानेवाली है।

4. निष्कर्ष

'रिपोर्ताज' और रेणु का 'ऋणजल: धनजल' की इस पाठ चर्चा के आधार पर निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि-

- 'रिपोर्ताज' में किसी घटना का साहित्यिक भाषा में कलात्मक वर्णन किया जाता है।
- किसी घटना का साहित्यिक भाषा में प्रामाणिक वर्णन जो भावकों को स्पंदित कर दे 'रिपोर्ताज' की श्रेणी में आता है।
- रिपोर्ताज आंचलिक जीवन के वैशिष्ट्यों को भी व्यक्त करते हैं।
- 'रिपोर्ताज' लेखक के जीवंत गद्य शैली को भी उदाहृत करते हैं।